

राज
कॉमिक्स
संख्या 1063
शैतान का जादू
बांकेलाल
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

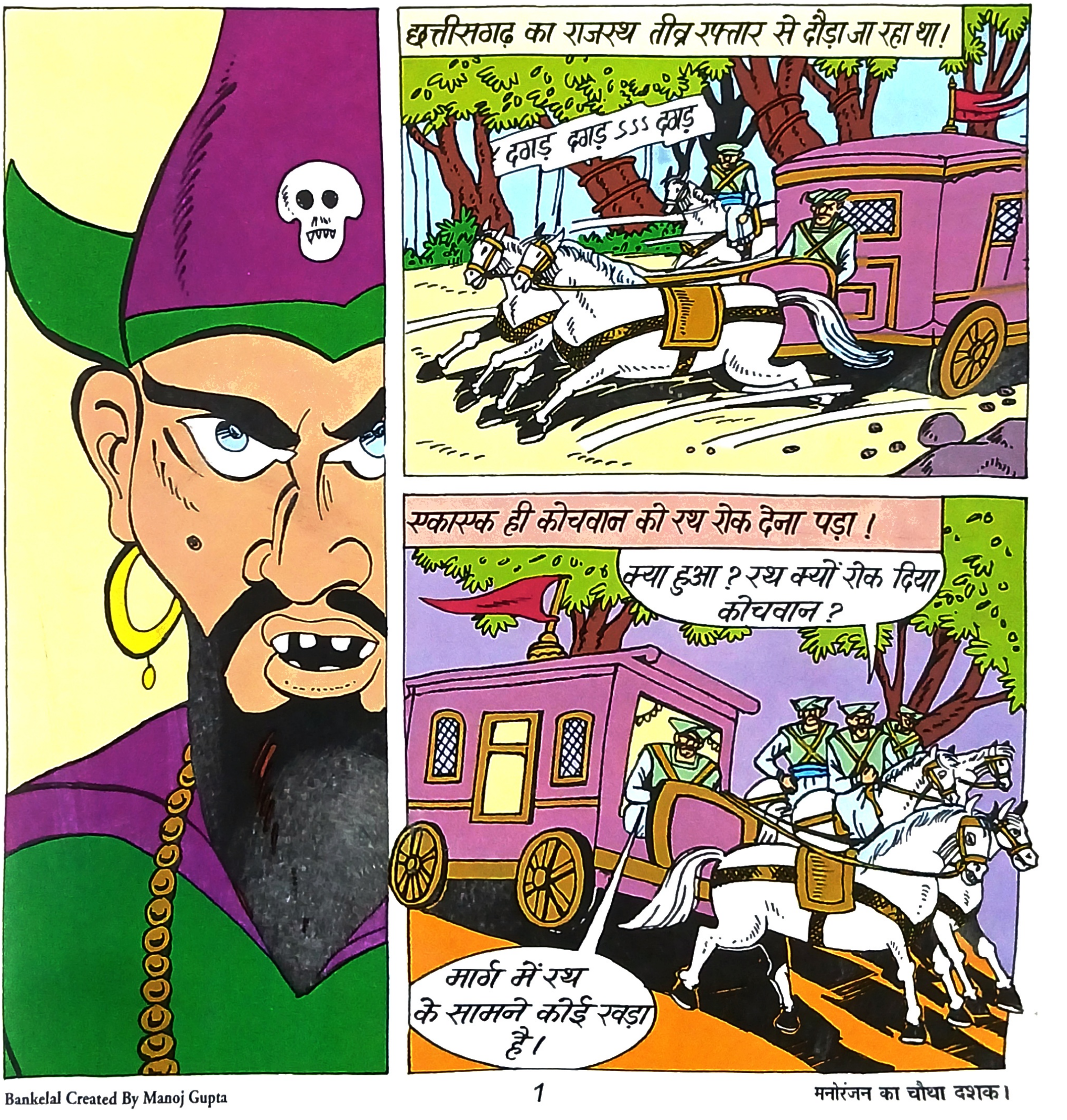
हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक

शैतान का जादू

लेखक: तरूणकुमार वाही संपादन: मनोज गुप्ता

चित्रांकन: बेदी

सहयोग: गौरव, अमित श्रीकांत, विजय




सैनिक ने कड़क कर पूछा-
ऐ! कौन हो तुम? तुम्हें पता नहीं कि ये राजरथ है। हटो आगे से।
वह व्यक्ति सैनिक की घुड़की सुनकर पलटा-
हीहीही। मुझे मालूम है कि ये राजरथ है। तभी तो मैंने इसकी राह रोकी है। हीहीही
ओह! तेरी ये मजाल!
मैं तुझे हिरासत में लेने आ रहा हूं।
मुझे हिरासत में लेने? हीहीही!
मुझे जादूगर टिंड टक्कड़ कहते हैं और ये जो मेरे हाथ में पुतला है...इसे कहते हैं 'जय बवाल'! सैनिक वेश के 'जय बवाल' की एक टांग में जब मैं झाड़ू का तिल्ला घुसेड़ूंगा तो मेरी ओर बढ़ते तेरे कदम फौरन रुक जायेंगे। हीहीही।


आह! पुतले की जिस टांग मे उसने तिल्ला चुभोया, मेरी वो टांग गायब हो गई- बहूहूहू।
हीहीही। आगे बढ़ और ले मुझे हिरासत में ताकि मैं तेरी दूसरी टांग भी गायब कर दूं। हीहीही
किंतु तुम्हारी मुझसे क्या दुश्मनी है? बहूहूहू!
मेरी शत्रुता तुमसे नहीं, राजरथ में सवार राजा छत्तीस सिंह से है।
राजा छत्तीससिंह! रथ की खिड़की का परदा हटाकर अपना थोबडा बाहर निकाल और देख.. कि तेरी मृत्यु तेरे सामने खड़ी है।
देख! मेरे हाथ में तेरी शक्ल का जयबवाल है। इसमें तिल्ले चुभो-चुभो कर मैं तुझे इस दुनिया से गायब कर दूंगा। हीहीही।
आज तू मेरे हाथों से नहीं बच सकता राजा छत्तीससिंह!
किंतु महाराज तो इस दुनिया से पहले ही गायब हो चुके हैं।

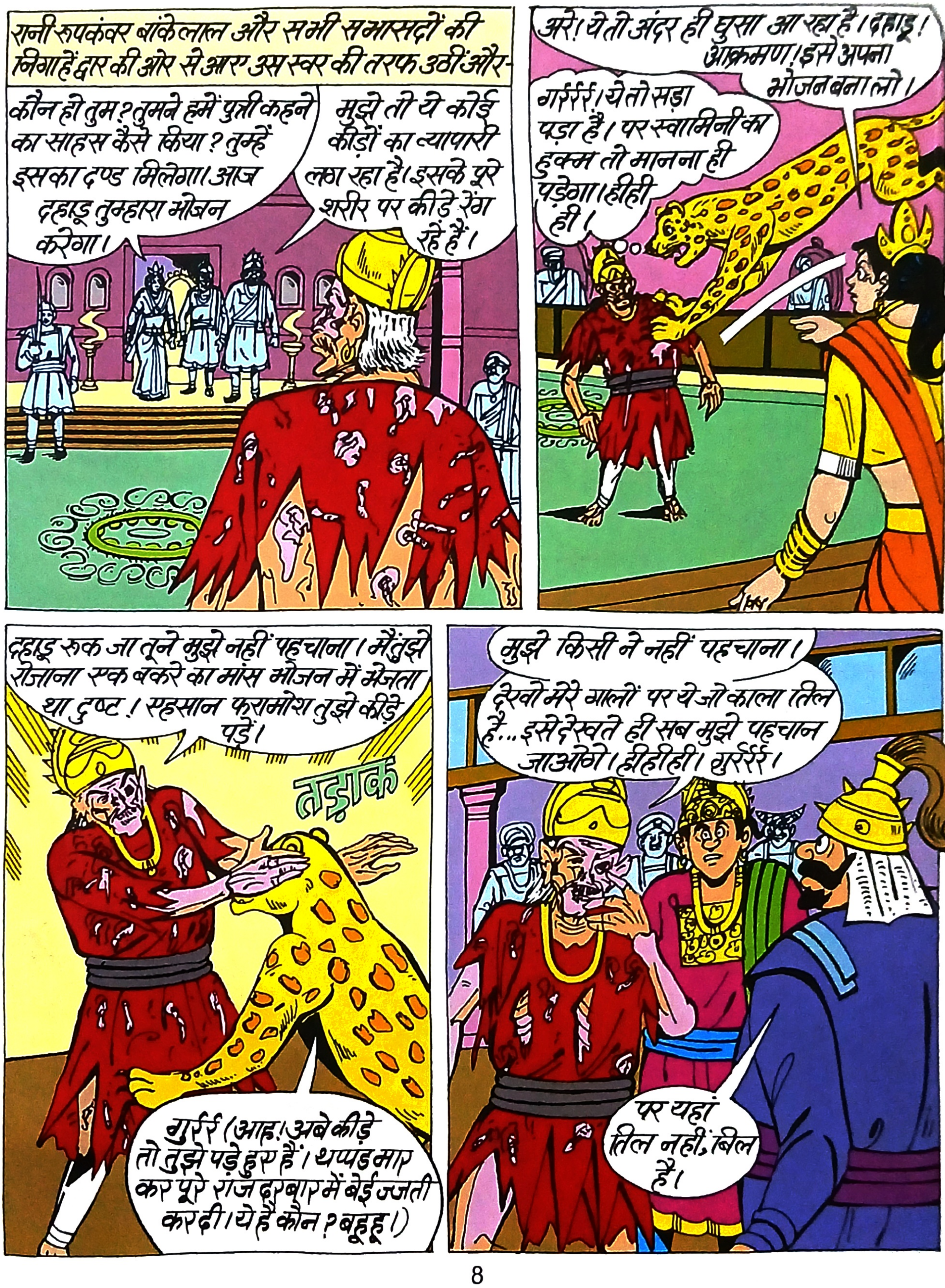

ये रथ तो खाली है! यह देखो!
हम तो इसकी धुलाई के लिये इसे नदी पर लेकर जा रहे थे। हीही ही।
इतना सुनते ही जादूगर टिंड टप कड़ का क्रोध और भी भड़क उठा।
नहीं! यह नहीं हो सकता अगर छत्तीस सिंह मर गया तो फिर मैं बदला किससे लूंगा!
उसे जीवित होना होगा...
उसे जीवित होना होगा... हीहीही गुर्रर्र
अरे! पर मेरी टांग तो ठीक करता जा। बुहु-हु! हुण मेरा की होऊ?

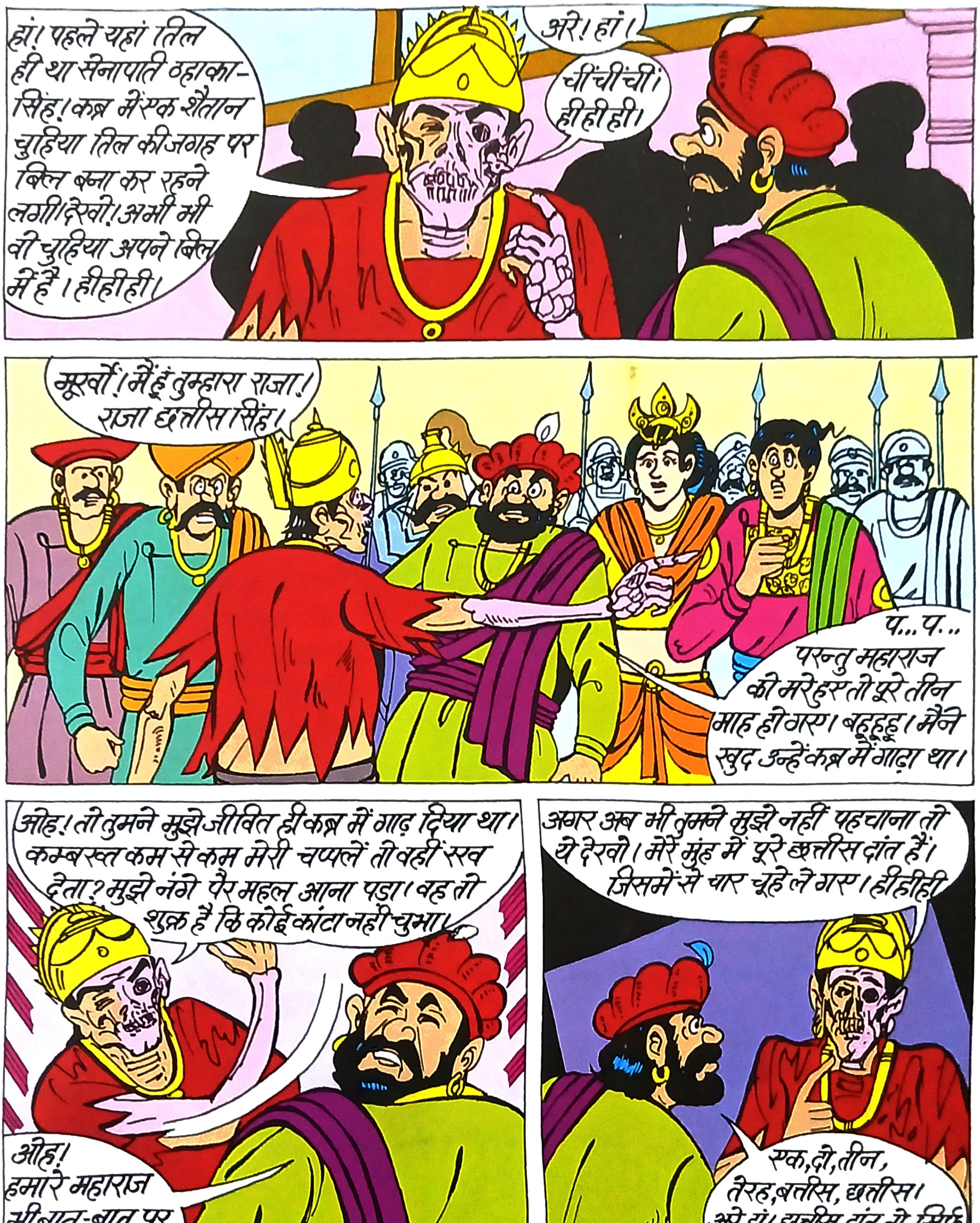


जबकि उसी समय छत्तीसगढ़ के राजमहल में राजदरबार की कार्यवाही आरम्भ होने से पूर्व –
सावधान! बाअदब बामुलायजा होशियार! छत्तीसगढ़ आजम महाराजा बांकेलाल जी दरबार में पधार रहे हैंऽऽऽऽ
वो मारा पापड़ वाले को। छत्तीसगढ़ आजम महाराज बांकेलाल यही सुनने को तो मेरे कान कब से तरस रहे थे। वाह! हीहीही
तो आखिर मुझसे विवाह होते ही रानी रूपकंवर ने राजगद्दी मुझे सौंप ही दी।
और मैं बन ही गया छत्तीसगढ़ का राजा!
आज पूरी हो ही गई मेरी कामना... हीहीही।
विशालगढ़ का तो बन नहीं पाया... पर छत्तीसगढ़ का सिंहासन अपना बन ही गया। हीहीही
वह रहा मेरा सिंहासन जो कि बड़ी बेसब्री से मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। हीहीही!
अब मुझे फौरन इस पर आसीन हो जाना चाहिये। हीही-ही।

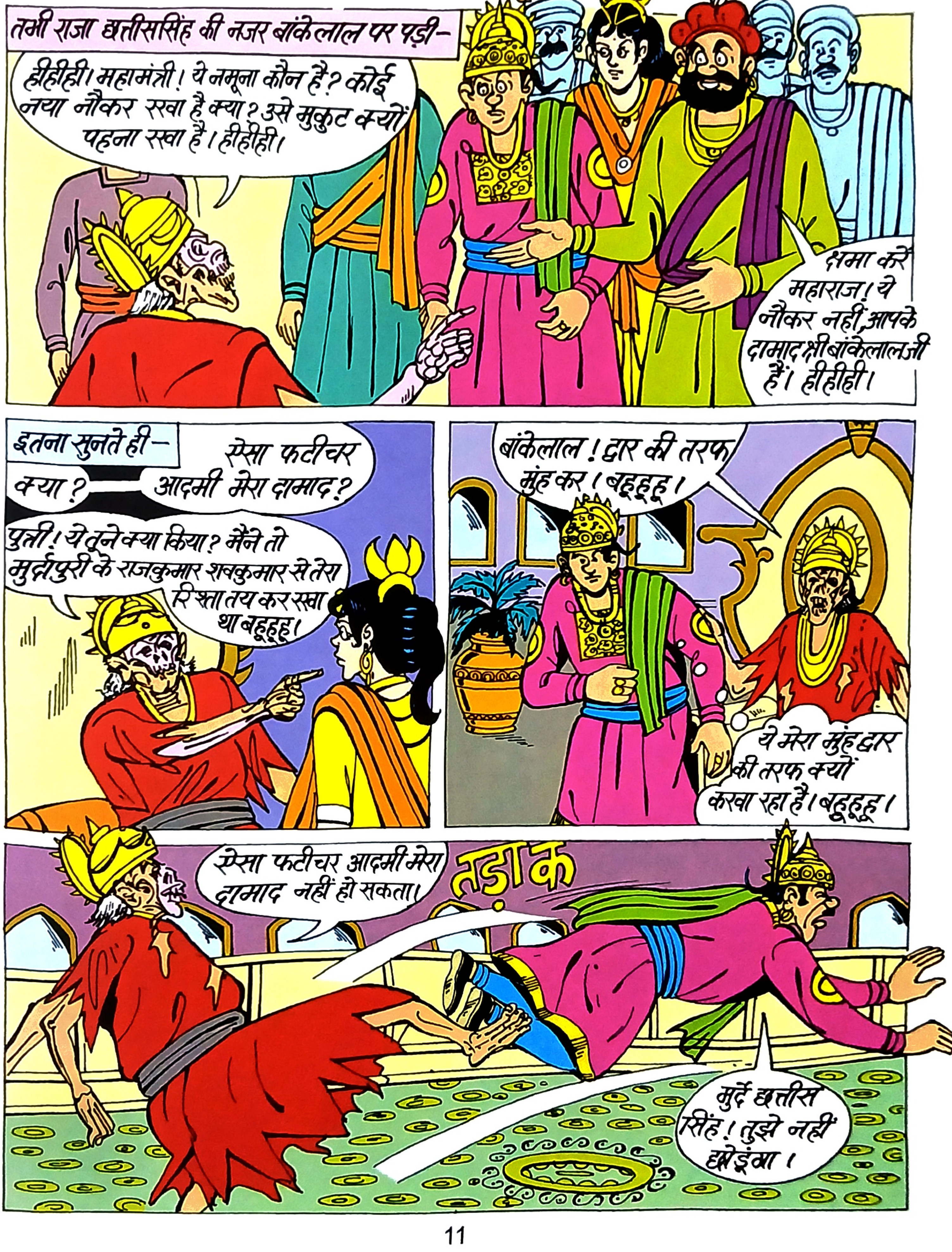

किंतु इससे पूर्व कि बांकेलाल राज सिंहासन पर आसीन हो जाता।
दहाड़ऽऽऽ हीहीही। (सिंहासन से दूर ही रहियो बे बांकेलाल नहीं ते मैं पंगा पा देना है। गुर्र्र्र। हीहीही।)
ये...ये तो दहाड़ है। इसे तो मैं भ...भूल ही नहीं सकता। बहूहूहू। पर ये मुझे आगे बढ़ने से क्यों रोक रहा है?
स्वामी कृपया आगे से हटिये।
ये तो रानी रूप की आवाज है! बहू-हूहू!
अरे आप तो गिर गए! अपने आप उठ जाइये।
दरअसल आप जिस सिंहासन की तरफ बढ़ रहे थे...वो मेरा है। आपका सिंहासन भी आ रहा है। मैंने कल ही बनवाने को कह दिया था। हीहीही।
अब समझा कि मैं बीच में क्यों आ गया था? गर्र्र्र। हीहीही
महारानी जी महाराज बांकेलाल जी का चरणासन बनकर आ गया। मोची के हाथ में कील लग गई थी, इसलिये विलम्ब की उसने क्षमा मांगी है। हीहीही।
आंय चरणासन! बहूहूहू।


हां स्वामी! मेरे स्वामी होने के नाते आप मेरे चरणदास हुए। और चरणदास तो चरणासन पर ही बैठेगा।
महामंत्री! चरणासन को मेरे चरणों के पास वाले स्थान पर रख दो हीहीही।
जी आज्ञा महारानी जी! हीहीही।
बेटा बांके! ये क्या चक्कर है?
तू तो राजा बनने आया था और बनाया जा रहा है चरणदास। बहुहुहु!
स्वामी! अब मैं अपने आसन पर आसीन होती हूं। मेरे स्थान ग्रहण करने के बाद कृपा कर आप भी अपना स्थान ग्रहण कर लें। किंतु उससे पहले नहीं! यही एक पालतू पति का कर्त्तव्य होता है। हीहीही।
हीहीही
बहुहुहु!
हिम्मत से काम लीजिये महाराज!
किंतु आज सिंहासन पर बैठने का मुहूर्त रानी रूप के लिए भी अच्छा नहीं था।
ठहरो पुत्री!
आंय पुत्री? ये हमें किसने पुकारा?

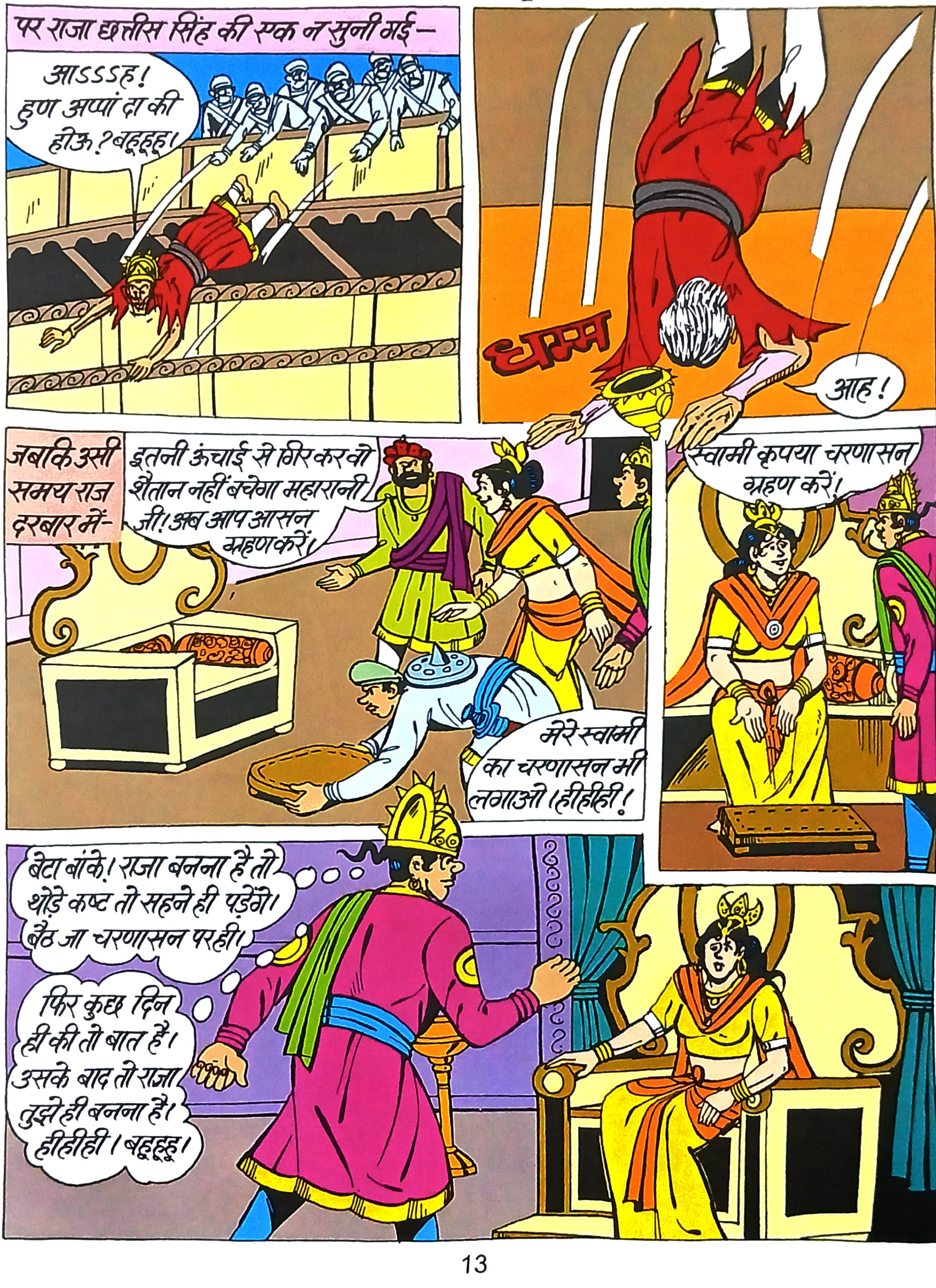

रानी रूपकंवर बांकेलाल और सभी सभासदों की निगाहें द्वार की ओर से आए उस स्वर की तरफ उठीं और-
कौन हो तुम? तुमने हमें पुत्री कहने का साहस कैसे किया? तुम्हें इसका दण्ड मिलेगा। आज दहाड़ू तुम्हारा भोजन करेगा।
मुझे तो ये कोई कीड़ों का व्यापारी लग रहा है। इसके पूरे शरीर पर कीड़े रेंग रहे हैं।
अरे! ये तो अंदर ही घुसा आ रहा है। दहाड़ू! आक्रमण! इसे अपना भोजन बना लो।
गुर्रर्र। ये तो सड़ा पड़ा है। पर स्वामिनी का हुक्म तो मानना ही पड़ेगा। हीही ही।
दहाड़ू रुक जा तूने मुझे नहीं पहचाना। मैं तुझे रोजाना एक बकरे का मांस भोजन में भेजता था दुष्ट! एहसान फरामोश तुझे कीड़े पड़ें।
तड़ाक
गुर्रर्र (आह! अबे कीड़े तो तुझे पड़े हुए हैं। थप्पड़ मार कर पूरे राज दरबार में बेइज्जती कर दी। ये है कौन? बूहूहू।)
मुझे किसी ने नहीं पहचाना।
देखो मेरे गालों पर ये जो काला तिल है...इसे देखते ही सब मुझे पहचान जाओगे। हीहीही। गुर्रर्र।
पर यहां तिल नहीं, बिल है।

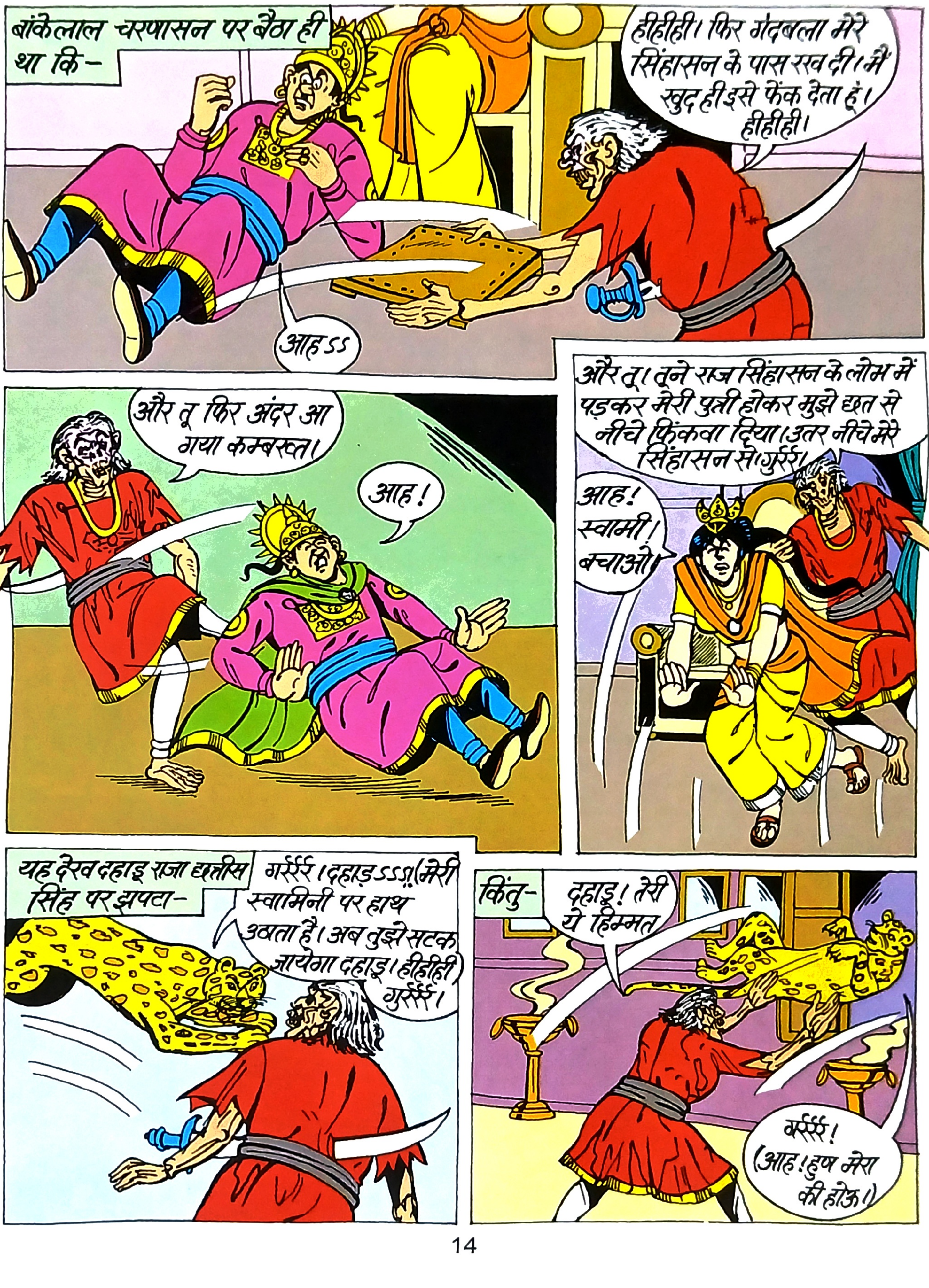

हां! पहले यहां तिल ही था सेनापति ठहाका-सिंह! कब्र में एक शैतान चुहिया तिल की जगह पर बिल बना कर रहने लगी। देखो! अभी भी वो चुहिया अपने बिल में है। हीहीही।
अरे! हां।
चींचींची। हीहीही।
मूर्खो! मैं हूं तुम्हारा राजा! राजा छत्तीस सिंह।
प... प... परन्तु महाराज को मरे हुए तो पूरे तीन माह हो गए। बुहूहू! मैंने खुद उन्हें कब्र में गाड़ा था।
ओह! तो तुमने मुझे जीवित ही कब्र में गाड़ दिया था। कम्बख्त कम से कम मेरी चप्पलें तो वहीं रख देता? मुझे नंगे पैर महल आना पड़ा। वह तो शुक्र है कि कोई कांटा नहीं चुभा।
ओह! हमारे महाराज भी बात-बात पर थप्पड़ मारते थे।
अगर अब भी तुमने मुझे नहीं पहचाना तो ये देखो। मेरे मुंह में पूरे छत्तीस दांत हैं। जिसमें से चार चूहे ले गए। हीहीही
एक, दो, तीन, तेरह, बत्तीस, छत्तीस। अरे हां! छत्तीस दांत तो सिर्फ हमारे राजा के ही थे।


जब तक मैं जिंदा हूं मेरे सिंहासन पर मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं बैठ सकता। ही हीही। मेरे लिए एक गिलास पानी लाओ।
बांके का बुरा हाल था—
बेटा बांके! अब ये मुर्दा छत्तीस सिंह कब्र में से उठकर कैसे और कहां से आ गया? बहुहुहु।
बेटा बांके। अब तेरा क्या होगा? अभी तक तो सिंहासन की एक ही वारिस थी जिसे मैं रास्ते से हटा कर जल्दी ही राजा बन जाता। पर अब ये दो हीते लग रहे हैं। कहीं ये विवाह करके तू फंस तो नहीं गया। कहीं तुझे लेने के देने न पड़ जाएं बांके बेटे!
तब राजा छत्तीससिंह की निगाहें पड़ीं चरणासन पर और—
अरे ये क्या पानी गिलास में क्यों नहीं लाया?
मुर्दे के लिए पानी तो इसी में ही जाता है महाराज! बहुहुहु
और ये यहां पर क्या पड़ा है? मैं कुछ दिन बाहर क्या चला गया कि दुनिया भर की गंदबला सिंहासन के पास लाकर डाल दी। बाहर फेंको इसे। गुर्र्र्र। हीहीही
अब क्या इस मुर्दे के साथ रहना होगा। बहुहुहु

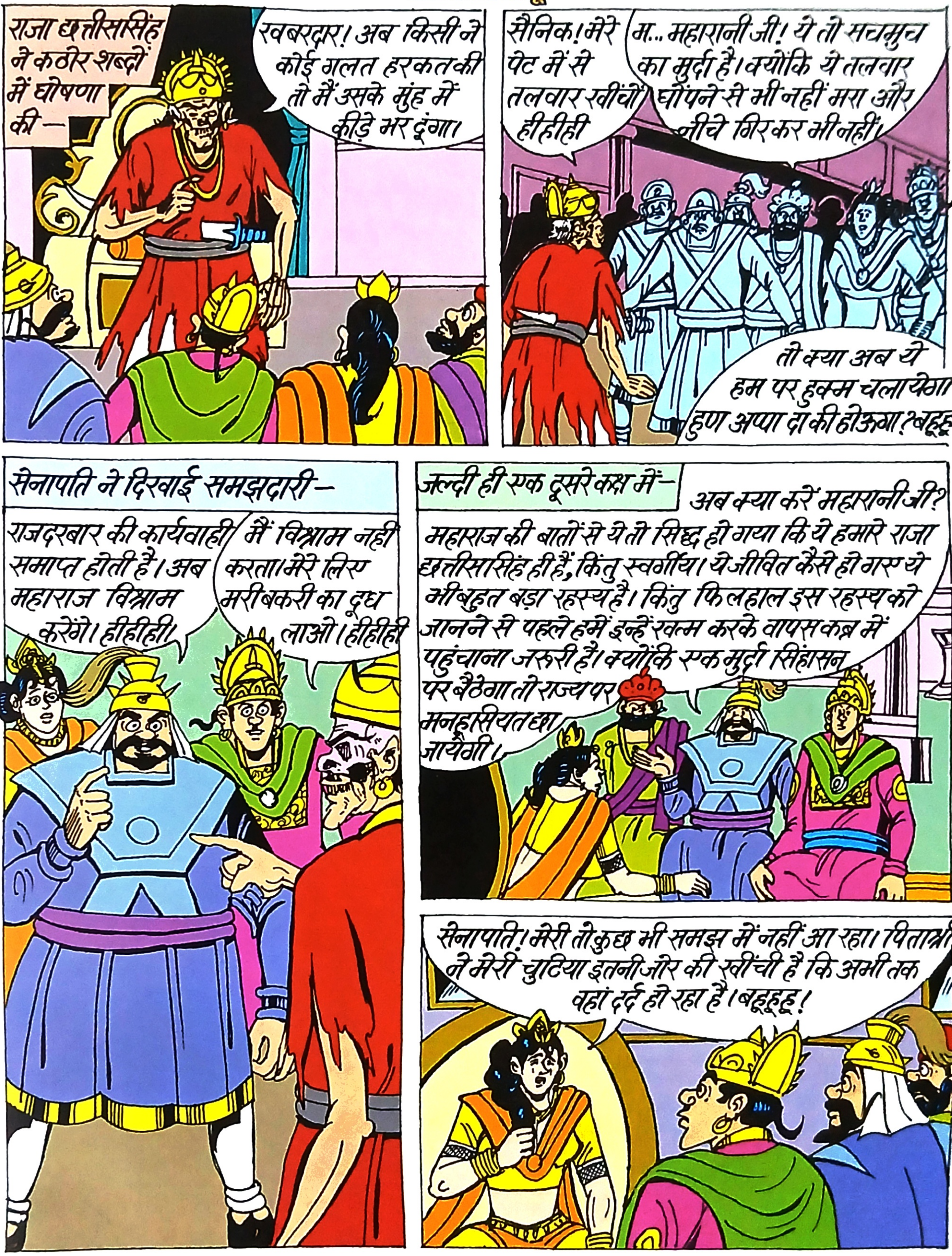

तभी राजा छत्तीससिंह की नजर बांकेलाल पर पड़ी–
हीहीही। महामंत्री! ये नमूना कौन है? कोई नया नौकर रखा है क्या? उसे मुकुट क्यों पहना रखा है। हीहीही।
क्षमा करें महाराज! ये नौकर नहीं,आपके दामाद श्री बांकेलालजी हैं। हीहीही।
इतना सुनते ही–
क्या?
ऐसा फटीचर आदमी मेरा दामाद?
पुत्री! ये तूने क्या किया? मैंने तो मुर्दापुरी के राजकुमार शवकुमार से तेरा रिश्ता तय कर रखा था बहूहूह।
बांकेलाल! द्वार की तरफ मुंह कर। बहूहूहू।
ये मेरा मुंह द्वार की तरफ क्यों करवा रहा है। बहूहूहू।
ऐसा फटीचर आदमी मेरा दामाद नहीं हो सकता।
तड़ाक
मुर्दे छत्तीस सिंह! तुझे नहीं छोड़ूंगा।

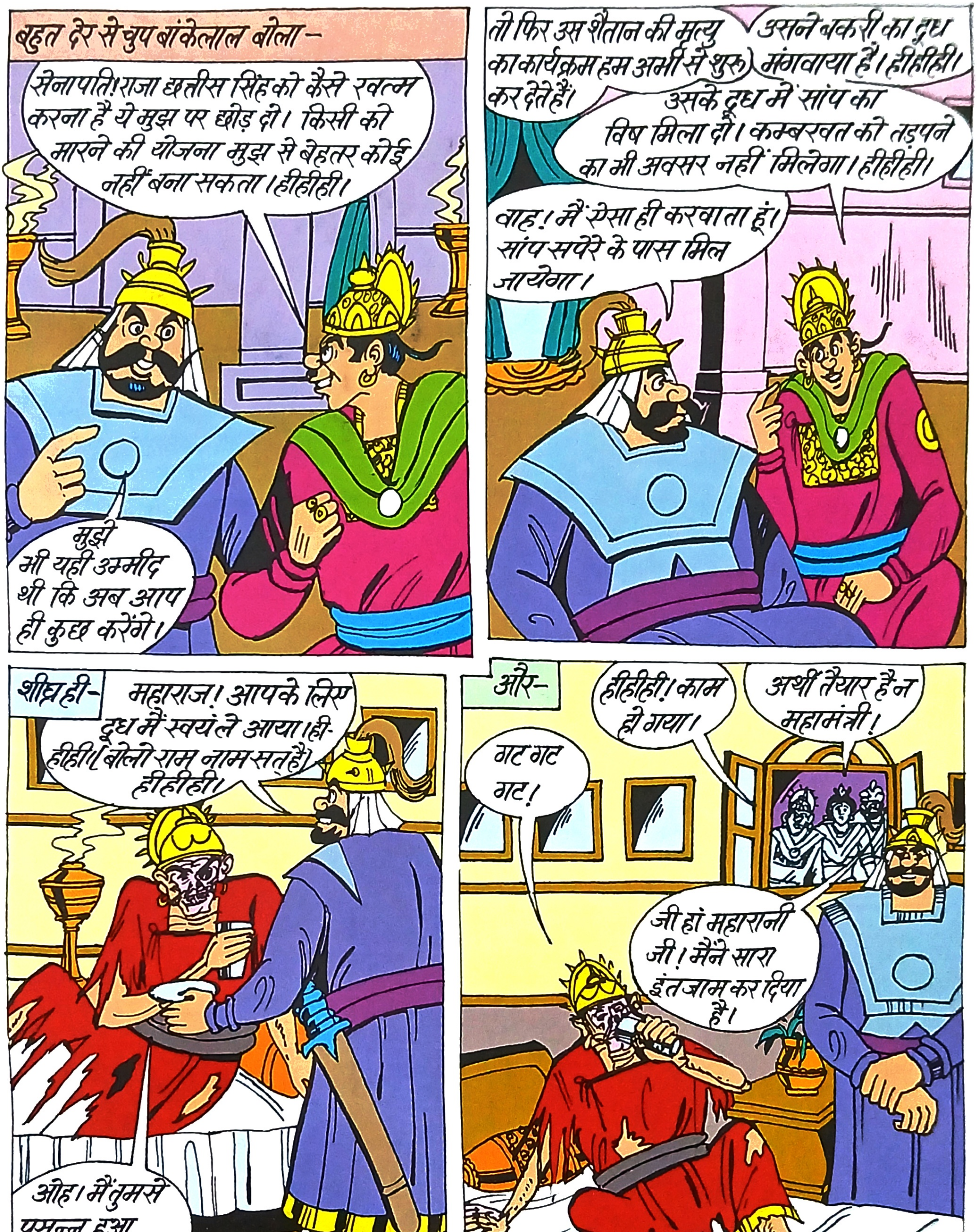

बांकेलाल को सहारा दिया सेनापति ने –
उठिये बांकेलाल जी! इसकी बकवास मैंने बहुत सुन ली।
आह! बहूहूहू!
इसे देख कर हम सब सकते में पड़ गए थे। इसलिये तत्काल ही इसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर पाए।
किंतु इस शैतान को अब मेरी तलवार सबक सिखा देगी। क्योंकि इसने पवित्र राज सिंहासन को अपवित्र करने की चेष्टा की है। इसकी सजा है मृत्यु।
खच्चाक
आह!
राजा सिंहासन से उठ खड़ा हुआ –
सेनापति! नमकहराम! तूने मुझे तलवार क्यों मारी?
तड़ाक
अरे! इस पर तो तलवार का कोई असर ही नहीं हुआ। खून भी नहीं निकल रहा। बहूहूहू!
तब तक रानी रूप भी संभल चुकी थी –
सैनिको, इसे उठाकर महल की छत से नीचे फेंक दो
पुत्री! ये तुम क्या कह रही हो?


पर राजा छत्तीस सिंह की एक न सुनी गई –
आऽऽऽह! हुण अप्पां दा की हीऊ? बहूहह!
धम्म
आह!
जबकि उसी समय राज दरबार में–
इतनी ऊंचाई से गिरकर वो शैतान नहीं बचेगा महारानी जी! अब आप आसन ग्रहण करें।
मेरे स्वामी का चरणासन भी लगाओ। हीहीही!
स्वामी कृपया चरणासन ग्रहण करें।
बेटा बांके! राजा बनना है तो थोड़े कष्ट तो सहने ही पड़ेंगे। बैठ जा चरणासन पर ही।
फिर कुछ दिन ही की तो बात है। उसके बाद तो राजा तुझे ही बनना है। हीहीही। बहूहूहू।



बांकेलाल चरणासन पर बैठा ही था कि-
हीहीही। फिर गंदबला मेरे सिंहासन के पास रख दी। मैं खुद ही इसे फेंक देता हूं। हीहीही।
आहऽऽ
और तू फिर अंदर आ गया कम्बख्त।
आह!
और तू। तूने राज सिंहासन के लोभ में पड़कर मेरी पुत्री होकर मुझे छत से नीचे फिंकवा दिया। उतर नीचे मेरे सिंहासन से। गुर्रर्र।
आह! स्वामी! बचाओ।
यह देख दहाड़ राजा छत्तीस सिंह पर झपटा-
गर्रर्र। दहाड़ऽऽऽ! (मेरी स्वामिनी पर हाथ उठाता है। अब तुझे सटक जायेगा दहाड़। हीहीही गुर्रर्र।
किंतु-
दहाड़! तेरी ये हिम्मत
गर्रर्र! (आह! हुए मेरा की होऊ।)


राजा छत्तीससिंह ने कठोर शब्दों में घोषणा की –
खबरदार! अब किसी ने कोई गलत हरकत की तो मैं उसके मुंह में कीड़े भर दूंगा।
सैनिक! मेरे पेट में से तलवार खींचो हीहीही
म... महारानी जी! ये तो सचमुच का मुर्दा है। क्योंकि ये तलवार घोंपने से भी नहीं मरा और नीचे गिर कर भी नहीं।
तो क्या अब ये हम पर हुक्म चलायेगा हुण अप्पा दा की होऊगा? बहूहू
सेनापति ने दिखाई समझदारी –
राजदरबार की कार्यवाही समाप्त होती है। अब महाराज विश्राम करेंगे। हीहीही।
मैं विश्राम नहीं करता। मेरे लिए मरी बकरी का दूध लाओ। हीहीही
जल्दी ही एक दूसरे कक्ष में –
अब क्या करें महारानी जी?
महाराज की बातों से ये तो सिद्ध हो गया कि ये हमारे राजा छत्तीससिंह ही हैं, किंतु स्वर्गीय। ये जीवित कैसे हो गए ये भी बहुत बड़ा रहस्य है। किंतु फिलहाल इस रहस्य को जानने से पहले हमें इन्हें खत्म करके वापस कब्र में पहुंचाना जरूरी है। क्योंकि एक मुर्दा सिंहासन पर बैठेगा तो राज्य पर मनहूसियत छा जायेगी।
सेनापति! मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा। पिताश्री ने मेरी चुटिया इतनी जोर की खींची है कि अभी तक वहां दर्द हो रहा है। बहूहूहू!


बहुत देर से चुप बांकेलाल बोला –
सेनापति! राजा छत्तीस सिंह को कैसे खत्म करना है ये मुझ पर छोड़ दो। किसी को मारने की योजना मुझ से बेहतर कोई नहीं बना सकता। हीहीही।
मुझे भी यही उम्मीद थी कि अब आप ही कुछ करेंगे।
तो फिर उस शैतान की मृत्यु का कार्यक्रम हम अभी से शुरू कर देते हैं।
उसने बकरी का दूध मंगवाया है। हीहीही।
उसके दूध में सांप का विष मिला दो। कम्बखत को तड़पने का भी अवसर नहीं मिलेगा। हीहीही।
वाह! मैं ऐसा ही करवाता हूं। सांप सपेरे के पास मिल जायेगा।
शीघ्र ही–
महाराज! आपके लिए दूध मैं स्वयं ले आया। हीहीही। (बोलो राम नाम सत है) हीहीही।
ओह। मैं तुमसे प्रसन्न हुआ सेनापति। हीहीही।
और–
हीहीही। काम हो गया।
अर्थी तैयार है न महामंत्री।
गट गट गट!
जी हां महारानी जी। मैंने सारा इंतजाम कर दिया है।

कहानी 19 पेज से जारी

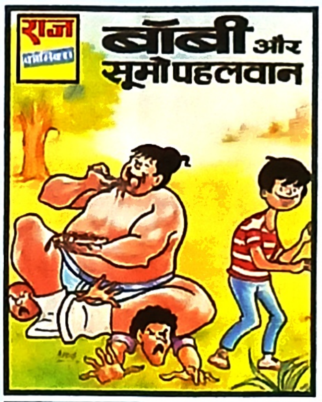
राज कॉमिक्स
की कार्टून सीरीज के
आकर्षक कॉमिक

दर्शाए गए मूल्य, उपहार एवं योजनाएं प्रस्तुत संशोधित संस्करण में इस कॉमिक्स के प्रथम संस्करण की मौलिकता को बनाए रखने के लिए यथावत लिए गए हैं। वर्तमान में इन मूल्यों, उपहारों, योजनाओं और उपलब्धता को लेकर पाठक भ्रमित ना हों।

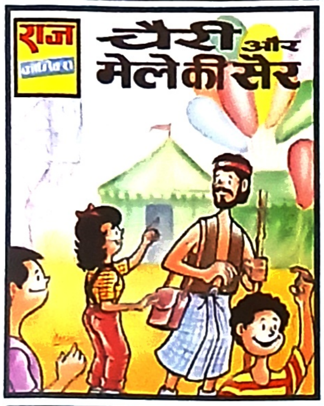


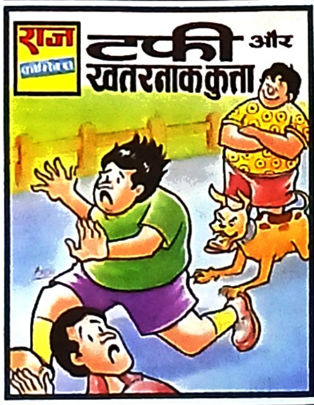


प्रत्येक का मूल्य: 10/-

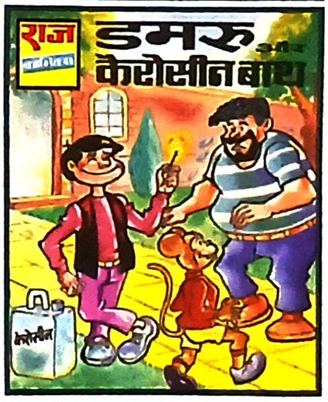




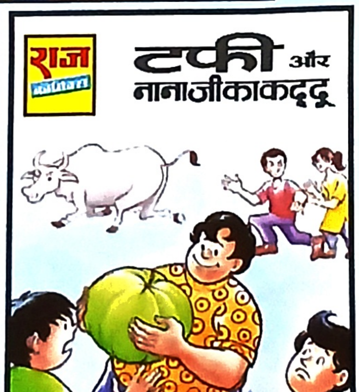


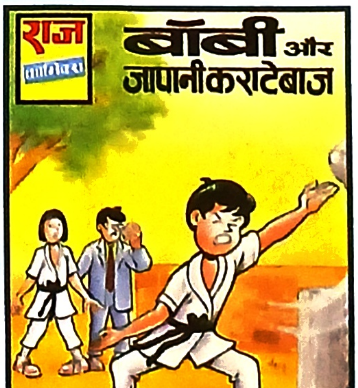






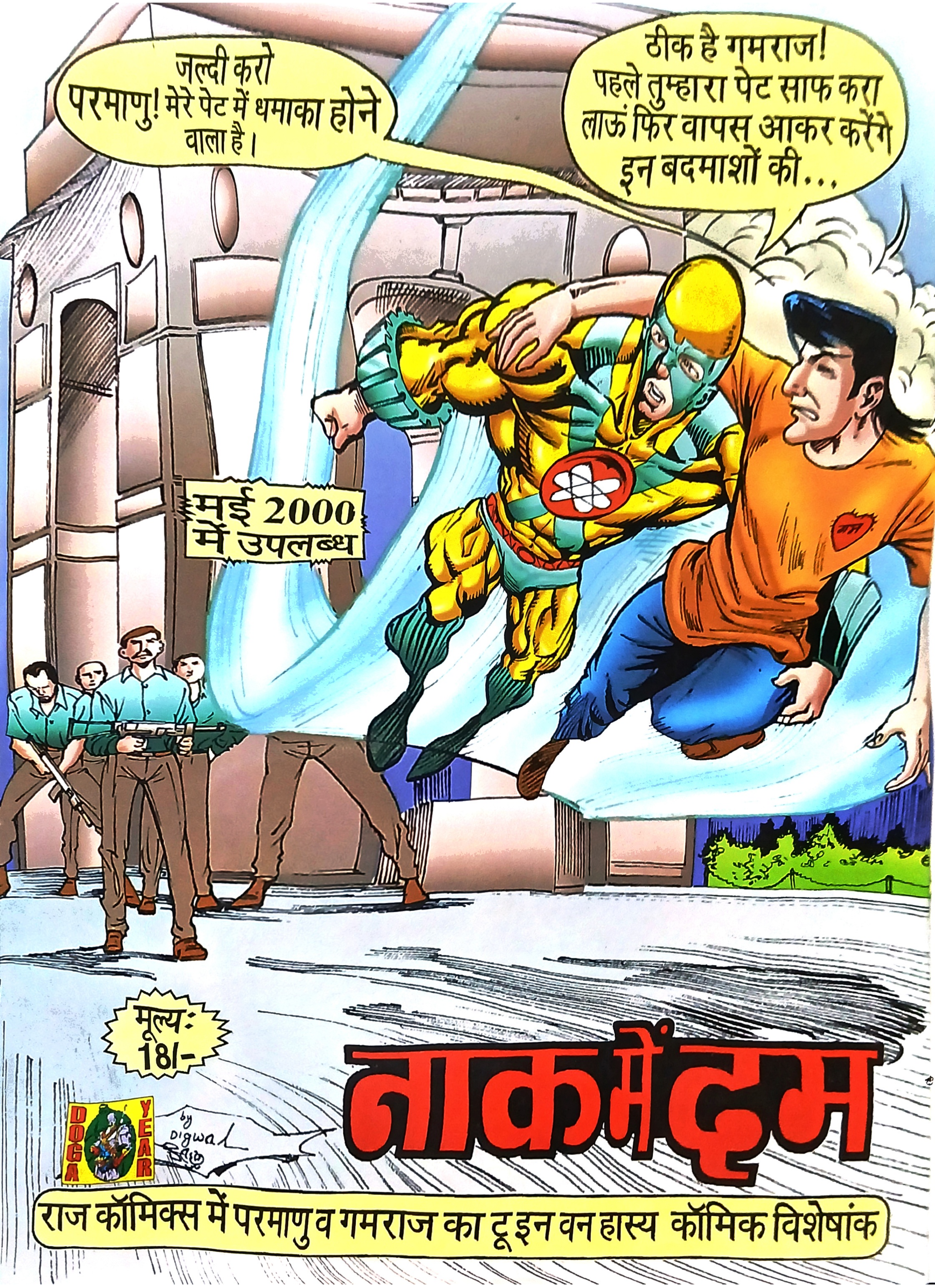








दिल्ली में वितरक: राजा पॉकेट बुक्स, 313 दरीबा कलां, दिल्ली-6. फोन: 3278397



जल्दी करो परमाणु! मेरे पेट में धमाका होने वाला है।
ठीक है गमराज! पहले तुम्हारा पेट साफ करा लाऊं फिर वापस आकर करेंगे इन बदमाशों की...
मई 2000 में उपलब्ध
मूल्यः 18/-
DOGA YEAR
नाक में दम
राज कॉमिक्स में परमाणु व गमराज का टू इन वन हास्य कॉमिक विशेषांक


बस! कुछ क्षणों में ही राजा लुढ़क जायेगा। हीहीही।
सेनापति तुम अभी तक यहां क्यों खड़े हो? खाली गिलास लेकर यहां से जा क्यों नहीं रहे?
हीहीही! वो महाराज बस यूं ही आपको देखने का दिल कर रहा है। हीही
अरे! आधे घण्टे से देख रहे हो। अभी दिल नहीं भरा क्या? हीहीही।
ज...जाता हूं महाराज!
कमाल है सबसे खतरनाक सांप का जहर दिया था। ये तो अभी भी नहीं मरा। बूहूहू!
सेनापति बांकेलाल के पास पहुंचा—
वो तो अभी भी जिन्दा है। बूहूहू।
यही तो मेरी भी चिन्ता का विषय है सेनापति हुण मेरा की होऊ माप्पे?
मेरे होते तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं प्रिये।
मेरा नाम बांके लाल है। मेरा काटा पानी भी नहीं मांगता। अब ये बात दूसरी है कि मैंने अभी तक किसी को काटा नहीं। हीहीही


अब सुनो राजा छत्तीसासिंह को खत्म करने की आखिरी योजना क्योंकि इसके बाद वो नहीं बचेगा। हीहीही।
सेनापति, तुम बावर्चीघर में जाकर एक बड़े कड़ाहे में घी खौलाने का कार्य आरंभ करो। हीहीही
आज महाराज के आगमन की खुशी में सूजी का हलुवा बनेगा और सूजी महाराज खुद अपने हाथों से कड़ाही में डालेंगे। हीहीही।
ओह! समझ गया मैं अभी जाता हूं बांके लाल जी!
हलुआ तो मुझे भी बहुत पसंद है। हीहीही गुर्रर्र
प्रिय जाओ। अपने स्वर्गीय पिताश्री को बावर्ची घर में लेकर जाओ।
चल आ दहाड़ू।
महामंत्री! तुम मेरे साथ रहोगी।
हीहीही! बेटे छत्तीसासिंह! तुझे छत्तीस का पहाड़ा याद न कराया तो मेरा भी नाम बांकेलाल नहीं।
तेरी उस लात का हलुआ न बना दिया तो फिर कहना जी तूने मुझे मारी थी। हीहीही।
महल के अंदर राजा छत्तीसासिंह का हलुआ बनाने की तैयारी चल रही थी।


जबकि उसी समय बाहर –
हीहीही! आ पहुंचा मैं राजमहल। यहीं मिलेगा मुझे मेरा शिकार राजा छत्तीस सिंह, जिससे मुझे भयानक बदला लेना है। हीहीही!
तभी –
ओह! ये क्या? ये सब लोग महल से निकल कर कहां भागे जा रहे हैं?
भागो वरना मुर्दा राजा मार डालेगा!
अबे मुर्दा भूत बोल। भूत बोल भूत। हमारा राजा मरकर भूत बन कर जिन्दा हो गया! बहूहूहू!
चलो अच्छा हुआ! अब मुझे महल में प्रवेश करने से कोई नहीं रोकेगा। हीहीही।
किंतु कुछ विशिष्ट लोग महल को छोड़कर जाने वाले नहीं थे –
आईये पिताश्री! कड़ाहे में सूजी डालकर हलुआ का श्रीगणेश कीजिये।
हां हां! क्यों नहीं! हलुआ तेरी मां को भी बहुत पसंद था और मुझे भी है। हीहीही!

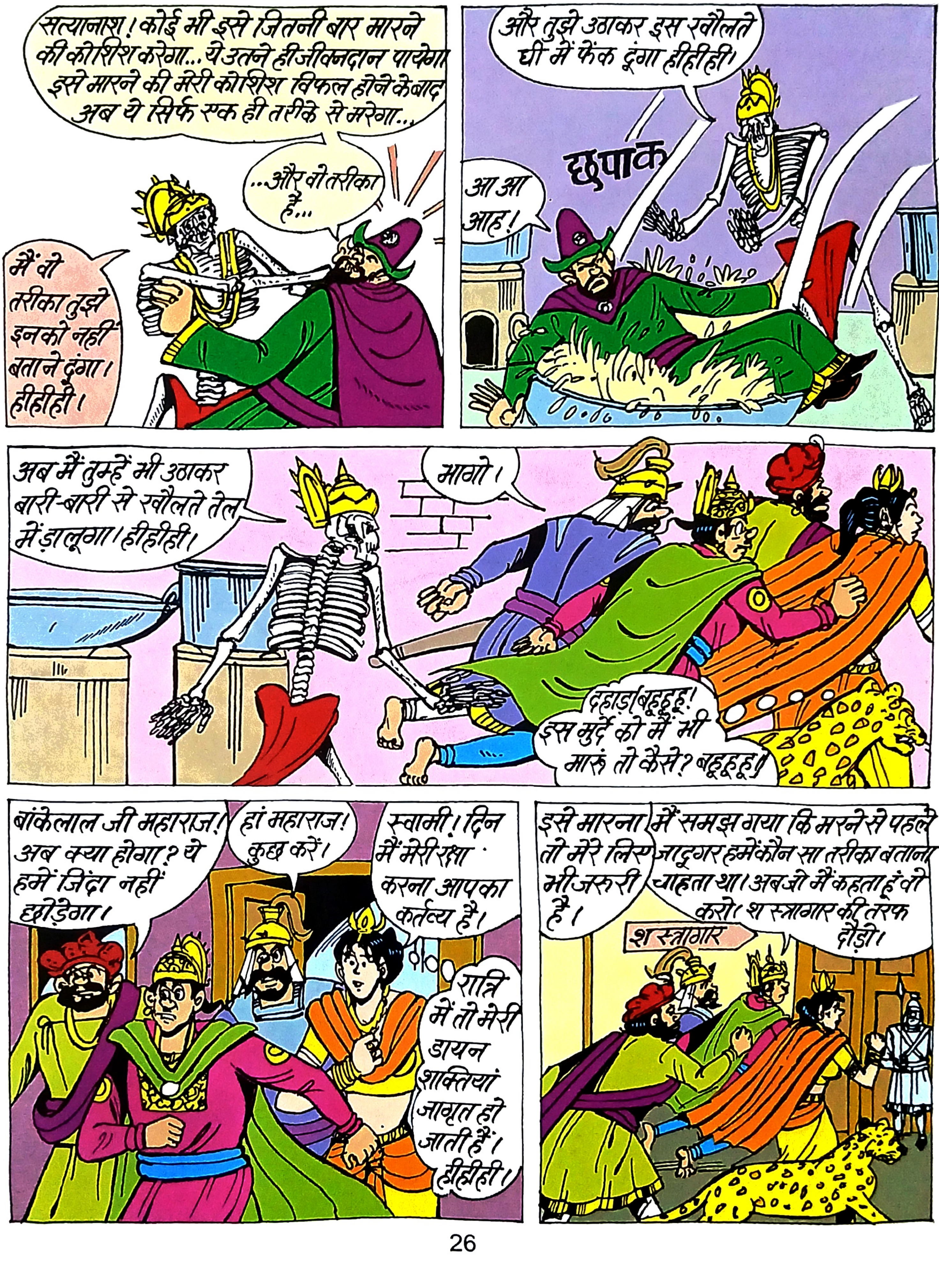

बांके वहीं छिपा खड़ा राजा छत्तीससिंह की आने वाली मौत का नजारा देख रहा था –
ये लीजिये पिताश्री! सूजी का थाल।
घी भी खौल गया है। सूजी की खाल तक गल जायेगी। हीहीही। म... मेरा मतलब इस मनहूस की।
महामंत्री! अब हमें दबे पांव राजा के पीछे पहुंचकर राजा को उठा कर खौलते घी के कड़ाहे में डालना होगा।
महाराज! मैं पीछे हट गया हूं। सूजी कड़ाहे में डाल दें। हीहीही।
अभी लो सेना पति!
दूसरे ही पल –
ये गई सूजी खौलते घी की कड़ाही में हलुआ बनने को। हीहीही।
अरेरेरे! ये क्या कर रहे हो कम्बख्तो!
कम्बख्त तो जा रहा है, घी के कड़ाहे में हीहीही।


दूसरे ही पल–
वो मारा पापड़ वाले को। हमारी योजना सफल हो गई।
ये हलुआ अब कुत्तों को खिलाने के काम आयेगा। हीहीही।
तभी–
आह! मुझे लात किसने मारी?
तड़ाक
कम्बख्त मेरा हलुआ बना कर कुत्तों को खिलाना चाहता था।
अरे बाप रे! ये तो अभी भी जिन्दा है।
दहाड़ (बहूहूहू। इसने तो मुझे भी डरा दिया।)
तो तुम सब मुझे मारने के षड़यंत्र में शामिल हो।
अब मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा। और तुम्हारा हलुआ बना कर कुत्तों को खिलाऊंगा। सबसे पहले इस फटीचर को खौलते घी में फेंकूंगा।
नहीं ऽऽऽ
सेनापति ने फौरन ही लम्बी पोनी का प्रहार कंकाल बन चुके राजा छत्तीससिंह की कलाई पर किया–
बांकेलालजी को छोड़ दे दुष्ट शैतान।
ओह! मेरा हाथ तोड़ दिया।
रानी ने भी उठा लिया बेलन–
मैं इस दुष्ट की खोपड़ी तोड़ दूंगी। गुर्रर्र!
लेकिन इससे पहले कि वो बेलन राजा के सिर पर पटक देती...

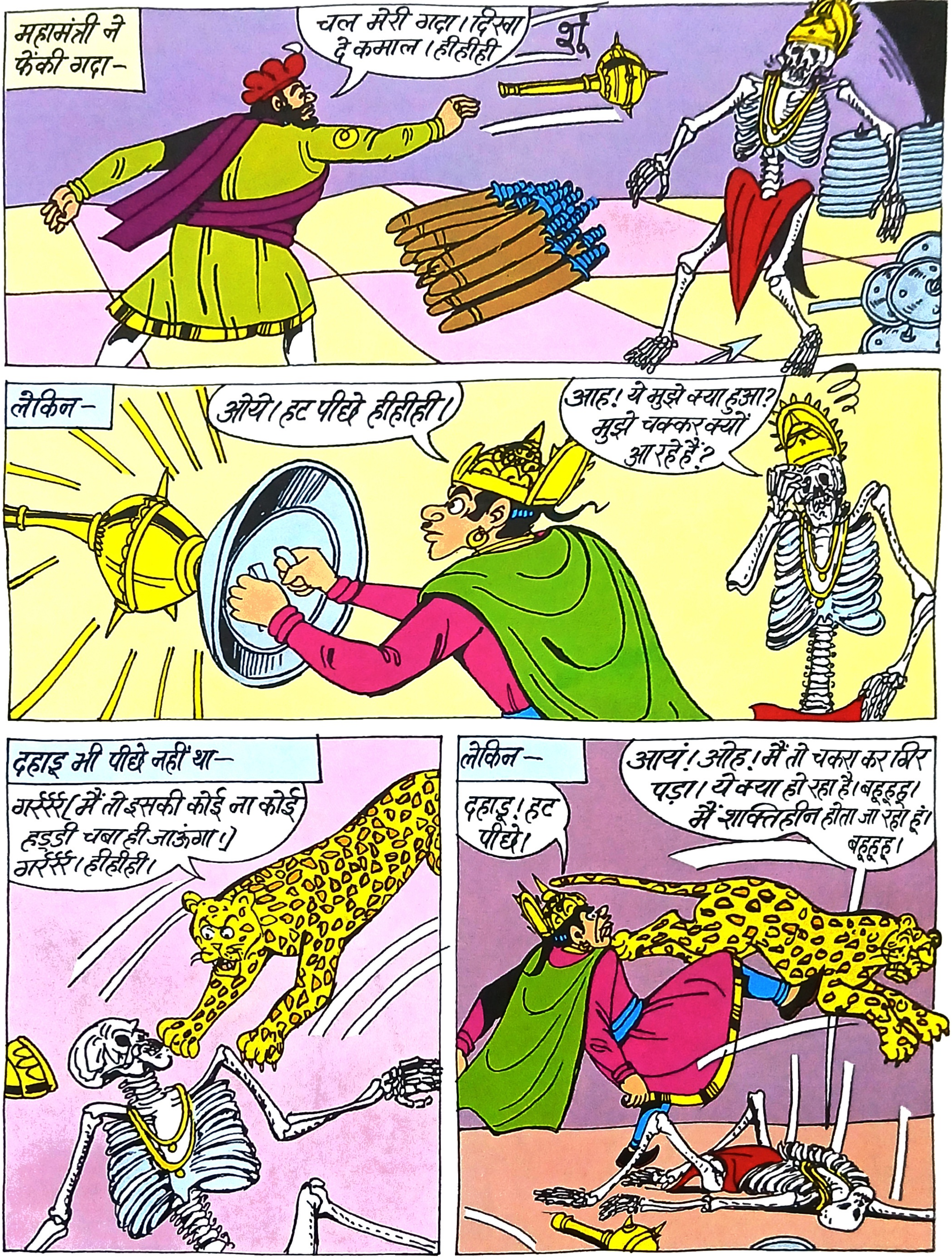

...कि तभी–
खबरदार ये मेरा शिकार है। जादूगर टिप्पू टक्कड़ का।
मैंने 'जिन्दा होजा' मंत्र बोल कर इसे इसलिये जिन्दा नहीं किया कि इसे तुम मारो। हीहीही। इसे मैं मारूंगा...
...क्योंकि ये मुर्गी चोर है। ये मेरी मुर्गी चुराकर उसकी सब्जी बना कर खा गया था।
वो मुर्गी साधारण मुर्गी नहीं थी। बल्कि जादू का अण्डा देने वाली मुर्गी थी जिससे मुझे तरह-तरह के जादू अपने आप आ जाते थे हीहीही। पर मुर्गी मरते ही मुझे नए जादू आने बंद हो गए। हीहीही।
तब मैंने जयबवाल देवता की प्रसन्न करके बवाल शक्ति प्राप्त की। जिसके फलस्वरूप मैं जिसकी भी शक्ल का जयबवाल बनाकर उसके जिस भी अंग में तिल्ला चुभोऊंगा उसका वो अंग हो जायेगा गायब।
जयबवाल शक्ति लेकर जब मैं छत्तीसगढ़ पहुंचा तो मुझे पता चला कि राजा छत्तीससिंह तो मर चुका है।
अगर मैं प्रतिशोध लिये बिना चला जाता तो ये मेरी हार होती।
इसलिये मुझे राजा को जीवित करना ही पड़ा। ताकि मैं अपने हाथों से उसे मार कर अपनी मुर्गी का बदला ले सकूं। हीहीही।
और अब वो समय आ गया है। अब मैं तिल्ले चुभो-चुभो कर राजा को गायब कर दूंगा। हीही-ही।
नहीं तू ऐसा नहीं कर सकता दुष्ट तेरी मुर्गी बड़ी बेस्वाद थी। मैंने अपने कुत्ते को खिला दी थी।
जबकि इतना सुनते ही बांकेलाल, रानी रूप, महामंत्री, सेनापति व दहाड़, प्रसन्नता से झूम उठे–
वो मारा पापड़ वाले को। हीहीही यही तो हम भी चाहते थे।
दहाड़। पर ये पापड़ की होंदा है। हीहीही शायद झापड़ का छोटा भाई होगा। गर्र्र्र।



जादूगर टिप्पू टक्कड़ ने पहला तिल्ला जयबवाल की टांग में घोंप दिया –
जयबवाल देवता! हीहीही!
खच्च
उसी पल जादूगर चौंक उठा –
आंय! ओय राजे! तेरी टांग गायब क्यों नहीं हुई?
मैनूं की पता! हीहीही!
!!!
दोबारा दूसरा तिल्ला घुसेड़ता हूं। हीहीही।
ओये जादूगर! मेरी टांग इस बार भी गायब नहीं हुई। हीहीही।
पर क्यों नहीं हुई? हुण अप्पा दा की होऊं?
ये मैं बताता हूं। हीहीही।
आह!
ओह! समझ गया कि जयबवाल का जादू इस बार क्यों नहीं चल रहा? क्योंकि जब मैं यहां पहुंचा था तो तुम सब इसे मारने की कोशिश कर रहे थे।
हमने तो इसे तीसरी बार मारने की चेष्टा की है।
तुम्हारी उस कोशिश ने इसके शरीर में अमृत पैदा कर दिया है।


सत्यानाश! कोई भी इसे जितनी बार मारने की कोशिश करेगा... ये उतने ही जीवनदान पायेगा। इसे मारने की मेरी कोशिश विफल होने के बाद अब ये सिर्फ एक ही तरीके से मरेगा...
...और वो तरीका है...
मैं वो तरीका तुझे इनको नहीं बताने दूंगा। हीहीही।
और तुझे उठाकर इस खौलते घी में फेंक दूंगा हीहीही।
छपाक
आ आ आह!
अब मैं तुम्हें भी उठाकर बारी-बारी से खौलते तेल में डालूगा। हीहीही।
भागो।
दहाड़! बहूहूहू! इस मुर्दे को मैं भी मारूं तो कैसे? बहूहूहू!
बांकेलाल जी महाराज! अब क्या होगा? ये हमें जिंदा नहीं छोड़ेगा।
हां महाराज! कुछ करें।
स्वामी! दिन में मेरी रक्षा करना आपका कर्तव्य है।
रात्रि में तो मेरी डायन शक्तियां जागृत हो जाती हैं। हीहीही।
इसे मारना तो मेरे लिए भी जरूरी है।
मैं समझ गया कि मरने से पहले जादूगर हमें कौन सा तरीका बताना चाहता था। अब जो मैं कहता हूं वो करो। शस्त्रागार की तरफ दौड़ो।
शस्त्रागार


और फिर–
हीहीही! दुष्ट कंकाले आजम! अब तू नहीं बचेगा।
हीहीही! तुमने सुना नहीं कि तुम मुझे जितनी दफा मारने की चेष्टा करोगे मुझे उतने ही जीवन दान मिलेंगे।
हम तुझे सिर्फ मृत्यु देंगे।
संभाल आया तीर।
भन्न
लेकिन इससे पहले कि तीर राजा छत्तीससिंह की हड्डियों में धंस जाता... बीच में ढाल लेकर आ गया बांकेलाल और तीर सीधा जाकर लगा ढाल से।
हीहीही।
टनाक
आंय! ये मुझे बचा क्यों रहा है?
सेनापति ने फेंका भाला–
ये आया भाला!
सायं
लेकिन–
दूर हट शैतान भाले। हमारे राजा को छूने की चेष्टा मत करियो। हीहीही।
टनाक
कमाल है! ये मेरी तरफ क्यों हो गया? बहुहहू। ऐ चक्कर की है।


महामंत्री ने फेंकी गदा—
चल मेरी गदा। दिखा दे कमाल। हीहीही
शूं
लेकिन—
ओये। हट पीछे हीहीही।
आह! ये मुझे क्या हुआ? मुझे चक्कर क्यों आ रहे हैं?
दहाड़ भी पीछे नहीं था—
गर्रर्र्र[मैं तो इसकी कोई ना कोई हड्डी चबा ही जाऊंगा।] गर्रर्र्र। हीहीही।
लेकिन—
दहाड़! हट पीछे।
आयं! ओह! मैं तो चकरा कर गिर पड़ा। ये क्या हो रहा है। बहूहूहू। मैं शक्तिहीन होता जा रहा हूं। बहूहूहू।


दूसरे ही पल –
वो मारा।
आ आह! ओह! मैं समझ गया कि ये समझ गए हैं कि मेरी मृत्यु मुझ पर घातक प्रहार करने से नहीं, बल्कि उन प्रहारों से मेरी रक्षा करने पर होवी और इन्होंने यही किया। मेरा शैतान दामाद बांकेलाल तभी बार-बार मुझे बचा रहा था। पर हुण अप्पां दा की होगा। बहुहुहूं।...
कड़ाक
सबके देखते-देखते राजा छत्तीसासिंह के टुकड़े-टुकड़े हो गए –
सारे मिल कर बोलो वो मारा पापड़ वाले को। हीहीही।
वो मारा पापड़ वाले को।
महाराज आज आपके कारण पूरे छत्तीसगढ़ पर आया संकट टल गया।
वो तो ठीक है। पर मेरे ऊपर आये संकट का क्या होगा... बहुहुह।
स्वामी! चरणासन ग्रहण करने का शुभ मुहूर्त निकल न जाए। हीहीही।
खैर! पीछा तो मैं इससे भी छुड़ा ही लूंगा। अपना भी और प्रजा का भी। हीहीही।
पर आज मुझे मुच्छड़ की पप्पी की पता नहीं क्यों याद आ गई। कम्बख्त ऐसे ही किसी अवसर पर मेरी पुच्ची लेता था। हीहीही।
उसी रात्रि –
हीहीही! बहुहुहू! राजा छत्तीसासिंह के छत्तीस दांत हैं ये मुझे पता भी चला तो तब जब उसके चार दांत चूहे ले जा चुके थे। पर मेरी खोज रात में डायन रानी के रूप में तब तक जारी रहेगी जब तक मुझे मिल नहीं जाता वो छत्तीस दांतों का जोड़ा। हीही ही।

समाप्त


अबे कैसा इंसान है तू? तुझे चट्टान पर पटक दिया। तुझे जमीन पर पटक दिया। तुझे पेड़ पर पटक दिया।
अबे मरता क्यों नहीं? मर, मर, मर, बांकेलाल मर।
अबे तू मरने की कह रहा है मैं तो यह सोच रहा हूं कि मुझे दर्द क्यों नहीं हो रहा?
मूल्यः 10/-
DOGA YEAR
-बेदी
धाड़
दुष्टयंती
राज कॉमिक्स में हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक


उड़ रही हैं गुल्लकें व तिजोरियां। इस मुसीबत से बचा सकता है केवल...
जेम्स बांड
राज कॉमिक्स में ट्रेजडी किंग गमराज का हास्य कॉमिक
शुभ लाभ
DOGA YEAR
CHAUBEY
VINEET



आज फिर वही हो रहा है जो सदियों से इस दुनिया में होता आया है-
तेरी अदा पे मैं फिदा!...
मूल्य: 18/-
एक लड़की के पीछे चार पक्के दोस्त आपस में झगड़ पड़े हैं।
MISS TOAD 2000
कुड़ी कड़के कालजा ले गई
दिल जिगर क्या है मैं तो तेरे लिए जां भी दे दूं।
लेकिन ठहरिए! ये लड़की कहां है?
ये तो मिस टोड 2000 है।
DOGA YEAR
यानी फाइटर टोड्स की...
गश खाके हो गया बेहाल कुड़िए
by अनुपम Vinod
अप्रैल 2000 में उपलब्ध
स्वप्नसुंदरी
राज कॉमिक्स पेश करते हैं: मोहब्बत भरे ठहाकों से ओतप्रोत एक विशेषांक

RAJ COMICS
राज
BY MANOJ GUPTA

बांकेलाल



हास्य सम्राट बांकेलाल।
उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लगा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।
सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।

प्रिय दोस्तों,
1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।
आपका,
मनोज गुप्ता



COMICS
ISBN 978-93-324-0469-4
9 789332 404694
GENL-1063
₹100.00
www.rajcomics.net